# "राष्ट्रीय काव्यधारा और सुभद्राकुमारी चौहान का काव्य"

प्रा. धनंजय शिवराम घुटुकडे

हिंदी विभग प्रमुख

भरती विद्यापीठास मातोश्री बायबाय श्रीपात्रो कदम

कन्या महाविद्यलया कडेगाव.

प्रस्तावना:→

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन विश्व इतिहास की ऐसी संघर्षगाथा है जिसने भारतीय समाज, सभ्यता एवं संस्कृति के प्रत्येक पहलू को प्रभावित एवं परिवर्तित किया था। पराधीनता की जोखडों से मुक्त होकर स्वतंत्रता पाने के लिए अपने प्राणों की आहुति देनेवाले अनगिनत क्रांतिकारियों की देशभक्ति, शौर्यगाथा त्याग, बलिदान का यथार्थ वर्णन संपूर्ण भारतीय साहित्य में सजीवता से पाया जाता है। हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकार स्वयं अपनी कलम के माध्यम से आजादी के यज्ञ में अपना योगदान दे रहे थे। उन क्रांतिकारियों का कार्य, उनकी अमर रचनाएँ स्वाधीनता संग्राम के जीवंत दस्तावेज है, जो आनेवाली पीढियों को भारतीय स्वाधीनता संग्राम के त्यागमयी, समर्पणवादी इतिहास का परिचय देती रहेगी और राष्ट्रनिष्ठा की भावना को बलशाली बनाती रहेगी।

भारतीय आजादी का आंदोलन एक ऐसी घटना है जिसने हमारे दशरासियों के यातनामय जीवन को मुक्ति देकर 'स्वराज्य'का सपना साकार किया था। आजादी की प्राप्ति के लिए उठाए गए कष्ट, भोगे हुए जुल्म, और दिया हुआ बलिदान ऐसे अमिट निशान है जो आज भी हमारे मन में विद्रोह, प्रतिशोध की भावना को उत्पन्न करते है। । अंग्रेजों की दमननीति का विरोध करनेवाले हमारे देशवासियों की कडी राष्ट्रनिष्ठा की साधना के बल पर ही स्थाधीनता प्राप्त हो सकती है यह सबके मन में विश्वास था। आजादी के आंदोलन को गति देने एवं उसे सफल बनाने हेतू हमारे राष्ट्रीय नेता, क्रांतिकारी, देश के युवक, प्रौढ, वृद्ध व्यक्ति, स्त्रीयाँ आदि सभी ने हरसंभव योगदान दिया था। ये आंदोलन किसी जाति धर्म या प्रदेश तक सीमित नहीं था बल्कि पूरा भारतवर्ष इसमें सम्मिलित हुआ था। भारत की विभिन्न भाषाओं के लेखक, कवि, गीतकार आदि रचनाकर्मी भी इस महायज्ञ में पिछे नहीं थे। एक क्रांतिकारक की भाँति उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से, लोकजागरण का कार्य करके देश के प्रति अपनी प्रतिबध्दता का सजगता से निर्वाह किया था। जाति, धर्म, क्षेत्र की सीमाओं को लाँघकर सभी भारतीय भाषाओं के साहित्यकार राष्ट्रीय चेतना की धारा को प्रबल बनाने के लिए कलम को शस्त्र बनाकर लोगों के ह्रदय में क्रांति की चिनगारी उत्पन्न कर रहे थे। हिंदी साहित्य में ऐसे अनेक रचनाकार है जिन्होंने अपनी भावभिव्यक्ति से आंदोलन को उग्र रूप दिया। जन्मभूमि के प्रति प्रेम, स्वर्णीम अतीत,विदेशी शासकों की निंदा, वर्तमान दशा पर क्षोभ,वीर पुरुयों- नेताओं की स्तुति, दमननीति का विरोध, स्वदेश का गुणगान, शहिंदों पर अभिमान, खद्दर का प्रचार आदि जैसे अनेक मुद्दों को इन रचनाकारों ने लोगों के सामने तन्मयता से लाकर उनमें विद्रोह की चेतना उत्पन्न की थी।

हिंदी गद्य और पद्य साहित्य में स्वाधीनता आंदोलन का यथार्थ प्रतिबिंब दिखाई देता है। हिंदी पद्य साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र, माखनलाल चर्तुवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान से लेकर श्यामनारायण पाण्डेय, सोहनलाल द्विवेदी तक अथवा उससे

भी आगे असंख्य कवियों ने अपनी रचना में भारतीय आजादी से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को सजिवता से अभिव्यक्ति दी है। सुभद्राकुमारी चौहान जो एक राष्ट्रीय कवयित्री के रूप में विख्यात है, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया था। कई बार उन्हें जेल में भी रखा गया था। "उनका साहित्य देशभक्ति की भावना का सच्चा प्रमाण माना जाता है। इनकी राष्ट्रीय कविताओं पर समसामायिक राजनीति, भारतीय इतिहास और संस्कृति की गहरी छाप है। सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय भावनाओं का समन्वय ने तत्कालीन राजनीतिक प्रश्नों के साथ कुशलता से कर देती है।"1 सुभदाजी की कविताओं ने जनआंदोलन को गति देने का अनन्य कार्य किया, लोगों में जागृति करके आजादी प्राप्ति हेतु प्रेरणा देने एवं उत्साह निर्माण करने हा कार्य किया। देशभक्ति की भावना से संबंधित उनकी अनेक काव्यरचनाएँ केवल लोकचर्चित ही नहीं रही बल्कि लोगों की प्रेरेणाशक्ति बनकर उन्हें आंदोलित करती रही। सुभद्राजी का राष्ट्रीय निष्ठा एवं भक्ति का प्रबल स्वर देशवासियों में विद्रोह की अग्नि को भड़का रहा था। परिणामों की चिंता किये बगैर अपनी मातृभूमि की मुक्ति का सपना साकार करने के लिए वे निडरता से विभिन्न आंदोलनों में देशभक्ति के स्वर को अपनी कविताओं के माध्यम से ऊँचा बना रही थी। 1857 के राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि पर आधारित 'झाँसी की रानी' इस कविता में सुभद्राजी ने रानी लक्ष्मीबाई के अपूर्व शौर्यगाथा को जनमानस के सामने लाने का सराहनीय प्रयास किया।

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुती तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आधी फिर से नयी जवानी थी,

दूर करने फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन सतावन में,

वह तलवार पुरानी थी

बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लडी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"2

वास्तव में सुभद्राजी सन सत्तावन की झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का प्रबल अवतार थी जिसने अपने अदम्य उत्साह और क्रांतिकारी साहित्यसृजन के द्वारा भारतीय जनमानस को उदबुध्द एवं प्रेरित किया वे अपनी क्रांतिकारी साहित्य-सृजन के लिए युगों-युगों तक याद की जाएगी उनका संपूर्ण साहित्य-सृजन कालजयी है जो उनके समय में भी प्रासंगिक था आज भी प्रासंगिक हैं और भविष्य में भी प्रासंगिक रहेगा " 3

अँग्रेजों के शासन कालखंड में भारतीय जनता एवं क्रांतिकारकों पर अमानवीय अत्याचार किए जाते थे अंग्रेजों की शामननीति के विरोध में बोलनेवाले लोगों पर जुल्म किया जाता था क्रांतिकारों की सहायता करनेवाले लोगों को पकड़कर जेल में रखना, उन पर कोडे बरसाना, गुलाम बनाकर काली कोठरी में रखना, फाँसी पर लटकाना आदि जैसी शिक्षाएँ दी जाती थी जिससे उनका कोई विरोध न करें लेकिन सुभद्राजी ने अपने काव्यसंसार के माध्यम से देशबांधओं में राष्ट्राभिमान की हुंकार भरकर उनमें मातृभूमि के लिए बलिदान देने के लिए प्रेरित किया था अंग्रेजों की दमननीति और भारतवासियों की अनन्य देशभक्ति के विषय में वे कहती है-

" हमें नहीं भय संगीनों का ,चमक रही जो उनके हाथ

जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रही जो बल के साथ

ढीठ सिपाही की हथकड़ियाँ

दमननीति के वे कानून

हरा नहीं सकते हैं हमको

यद्यपि बहावें प्रतिदिन खून " 4

महात्मा गांधीजी के कार्यों से प्रेरित होकर सुभद्राजी असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हुई विभिन्न क्रांतिकारी दलों के साथ मातृभूमि के लिए कार्य करने लगी और अपने ओजस्वी काव्य के माध्यम से जनता को प्रेरित किया परिणामस्वरूप सुभद्रा जी को जेल में रखा गया। फिर भी अपने कर्तव्यबोध से कभी भी वह विचालित नहीं हुई और सदा ही वीरों का गुणगान गाती रही-

" तिलक, लाजपत, गांधीजी भी

बंदी कितनी बार हुए

जेल गये जनता ने पूजा

संकट में अवतार हुए "5

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाली एक महत्वपूर्ण घटना "जालियाँवाला बाग हत्याकांड ने पूरे देश में अंग्रेजों के विरोध में विद्रोह की भावना को तीव्र बनाया इस नृशंस हत्याकांड में प्रत्येक भारतीय का हृदय दहल गया था सुभद्राजी ने ' जालियाँवाला बाग में वसंत' इस काव्य रचना में इसका अत्यंत संवेदनापूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया है इस अमानवीय घटना पर कवि शोक व्यक्त करते हुए कहती है-

" परिमलहीन पराग दाग-सा बना पड़ा है।

हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा हैं।

आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना

यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा - खाकर

कलियाँ उनके लिए गिराना थोडी लाकर।"6

सुभद्राजी स्वयं क्रांतिकारी बनकर स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हुई थी। अपने राष्ट्रीय नेताओं ने चलाए विभिन्न आंदोलनों में वह अग्रसर थी। परिणामों की चिंता किये बिना निरंतर देश की मुक्ति के लिए प्रयासरत रही। अपने समय के स्त्रीयों को आजादी के महायज्ञ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरणा देते हुए वह कहती है -

"सबल पुरुष यदि भीरु बनें, हमको दे वरदान सखी।

अबलाएँ उठ पडे देश में करें युद्ध घमासान सखी।

पंद्रह कोटि असहयोगिनियाँ, दहला दे ब्रह्मांड सखी।

भारत लक्ष्मी लौटाने को रच दें लंका काण्ड सखी।" 7

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि अपनी अनन्य देशभक्ति के माध्यम से तत्कालिन देशवासियों के मन में राष्ट्रीयता की धारा को प्रबल बनाने का उत्तरदायित्व निभाकर सुभद्राजी ने स्वाधीनता के यज्ञ को तेजोमय बनाया। राष्ट्रीयता की भावना को बलशाली बनाने का उनका प्रयास उनकी अदम्य देशभक्ति का सच्चा प्रमाण हैं।मातृभूमि की मुक्ति का ध्यास लेकर अंतिम साँस तक देशभक्ति की भावना को सर्वोपरि रखने का उन्होंने कार्य किया। उनके द्वारा लिखे काव्यों के बोल निरंतर आजादी के इतिहास को लोगों के हृदय में ताजा रखकर अपना महत्त्व अभिव्यक्त करते रहेंगे।

* संदर्भ ---

1) आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे , विकास प्रकाशन कानपुर, व्दितीय संस्करण 2008, पृष्ठ-79

2) सुभद्रा समग्र, सुभद्राकुमारी चौहान, पृष्ठ- 66

3) लेख, राष्ट्रीय जागरण और सुभद्राकुमारी चौहान, रामपत यादव, IJRSML जर्नल 2020, पृ.61

4) सुभद्रा, समग्र, पृ. 100

5) मुकुल तथा अन्य कविताएँ, सुभद्राकुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण-1980 पृष्ठ 114

6) सुभद्रा समग्र, पृ, 80-81

7) वही, पृ.71